Received: Jul '25
Revised:
Accepted: Aug '25

© 2025 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

"मनु एवं कौटिल्य के राजनीतिक चिन्तन में धर्म व धर्मनिरपेक्षता का समावेश : एक अध्ययन"

शोध निर्देषक :
डॉ. जगदीश प्रसाद कड़वासरा
(सहायक प्रोफेसर)
कला संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

शोधकर्ता :
पीरा राम
कला संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है कि आज भू–मण्डलीकरण के दौर में परस्परावलम्बन के युग में धर्मनिरपेक्षता वांछनीय ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है। भारत के राजनीतिक चिन्तन में प्राचीन समय में मनु एवं कौटिल्य के काल में धर्म का जो स्वरूप रहा है केवल उस धर्म का ज्ञान प्राप्त करना ही मेरे इस शोध का उद्देश्य नहीं है, अपितु धर्म की उस अवधारणा के आधार पर वर्तमान की राजनीतिक एकीकरण की एक प्रमुख समस्या साम्प्रदायिकता को हल करने में हमें कहाँ तक सफलता मिल सकती है, ये ज्ञान प्राप्त करना है।

Keywords:- राजनीतिक चिन्तन, धर्म, धर्मनिरपेक्षता।

प्रस्तावना :–

प्राचीन भारत में राजनीति का सर्वप्रमुख आधार धर्म ही था। धर्म और राजनीति एक–दूसरे से किसी भी क्षेत्र में पृथक न थे। भारत में राज्य और शासन की अनेक संस्थाओं का विकास हुआ और साथ ही राज्य व शासन के विषय में प्राचीन आचार्यों ने अनेक मूल्यवान विचार दिये। उन सभी संस्थाओं और विचारों का आधार धर्म था। हमारे पूर्वजों ने धर्म को ही सर्वोपरि सत्ता माना और जीवन के प्रत्येक कार्य को धर्म से सुशासित रखा। इस दृष्टि से प्राचीन भारतीय राजनीति आधुनिक राजनीति से पूर्णतया भिन्न थी। प्राचीन भारत में राजा धर्म से बँधा था तथा राजा का व्यक्तिगत जीवन और उसकी दैनिक दिनचर्या धर्म से विनियमित थे। परिजन तथा पुरजन, यहाँ तक कि शत्रु के साथ भी उसका संबंध धर्म के आधार पर था और युद्ध–विषयक नीति भी धर्म–निर्दिष्ट थी। केवल राजा ही नहीं प्रजा भी अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में सदा ही धर्म का पालन करती थी। धर्म शब्द धृ धातु से बना है, जिसका अर्थ है धारण करना। अभ्युदय, अपीड़न और धारण अर्थात संरक्षण जिस उपाय से हो, वही धर्म है।

हिन्दुओं के लिए वेद ही सम्पूर्ण ज्ञान और धर्म के स्रोत हैं, इसके पश्चात धर्मशास्त्र आते हैं। ''धर्मस्य शीलमेवादि'' अर्थात् शील ही धर्म का कारण है। शील से ही तीनों लोक जय किये जा सकते हैं; इस लोक में शीलवान मनुष्यों के लिए कोई भी कार्य असाध्य नहीं है। 'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः'' अर्थात् जिससे अभ्युदय (लौकिक उन्नति) और निःश्रेयस (पारलौकिक उन्नति) हो वही धर्म है। यज्ञ, दान एवं तप रूप कर्म ही धर्म है। संक्षेप में, जिससे समस्त प्राणियों का संरक्षण तथा उन्नति होती है, वही धर्म है या जिससे सम्पूर्ण समाज का पूर्ण व सर्वांगीण विकास हो वही धर्म है।

शोध अध्ययन का महत्व :–

कौटिल्य अर्थशास्त्र में राज्य के हित में ऐसी कूटनीति का प्रतिपादन करते हैं, जिससे स्पष्टतः प्रतीत होता है कि राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कभी–कभी नैतिकता को त्यागना पड़ सकता है, फिर भी उसकी मान्यता है कि दण्डनीति वह विज्ञान है, जिससे मनुष्य के सांसारिक ध्येयों की पूर्ति अथवा प्राप्ति होती है तथा राज्य का अन्तिम ध्येय मनुष्य के पूर्ण जीवन को प्राप्त कराना है, अर्थात् उसे इस जीवन में धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति में पूर्ण सहायता देना है। प्राचीन भारत में राजनीतिक विचारों की आधारशिला वेद संहिताएँ और ब्राह्मण ग्रन्थ ही रहे। चूँकि प्राचीन भारतीयों का झुकाव धर्म की ओर था, अतः यह स्वाभाविक ही है कि उनका राजनीतिक जीवन धर्म से मिश्रित था अर्थात् उसके राजनीतिक जीवन के मुख्य पहलू धार्मिक थे। राज्य का मुख्य ध्येय धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति द्वारा मोक्ष प्राप्त करने में सहायक होना था। साथ ही राजा के पद को दैवी समझा जाता था, परन्तु राजा का पद दैवी होते हुए भी सीमाओं के अधीन था। राजा को इन्द्र की भाँति अपने राज्य पर हितकारी कार्यों की वर्षा करनी चाहिए, यम की भाँति उसे अपनी प्रजा पर नियंत्रण रखना चाहिए, वरूण की भाँति अपराधी को दण्ड देना चाहिए इत्यादि। इस प्रकार राजा में प्रायः सभी प्रमुख देवताओं के गुण होने चाहिए। ऐसा ही राजा देवांश होता था, जिसे धार्मिक राजा भी कहते थे।

समस्या कथन :–

"मनु एवं कौटिल्य के राजनीतिक चिन्तन में धर्म व धर्मनिरपेक्षता का समावेश : एक अध्ययन"

अनुसंधान प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध में समाज विज्ञानों में प्रयुक्त वैज्ञानिक शोध पद्धति को अपनाया गया है, जिसके अन्तर्गत सर्वप्रथम भारतीय राजनीतिक चिन्तन में धर्म की और धर्मनिरपेक्षता की परम्परा विषय का चयन कर मनुस्मृति

एवं अर्थशास्त्र में एवं प्रत्येक काल में धर्म और धर्मनिरपेक्षता की परम्परा, उसके राजनीति पर प्रभाव, धर्म की अवधारणा एवं धर्मनिरपेक्षता के स्वरूप आदि का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध अध्ययन करने का प्रयास किया है।

सीमांकन :–

प्रस्तुत शोधकार्य को भारत के राजस्थान राज्य के विभिन्न जिलों तक सीमित रखा गया है।

शोध अध्ययन के उद्देष्य :–

भारतीय राजनीतिक चिन्तन में धर्म एवं दण्डनीति के व्यापक महत्व को समझना ही प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है।

निष्कर्ष :–

धर्म एक गतिषील विचार है जिसकी परिस्थितिगत व्याख्या देष और काल के अनुरूप भिन्न–भिन्न हो सकती है, किन्तु मर्यादा निर्वाह के सार–तत्व के रूप में यह विचार सार्वकालिक है। पारम्परिक चिन्तन में धर्म की कतिपय व्याख्याऐं, आचार के कतिपय नियम व्यवहार की कतिपय सीमाऐं संभवतः आज प्रासंगिक न हों, किन्तु यह निर्विवाद है कि प्रत्येक युग का एक धर्म होता है। यहाँ तक कि आपत्तिकाल का भी एक धर्म होता है। धर्म के चरण कालगणना के अनुसार अधिक अथवा कम हो सकते हैं, किन्तु उसकी प्रासंगिकता फिर भी बनी रहती है। पारम्परिक भारतीय चिन्तन की यह विरासत आज भी राजनीतिक विचारों के अध्येताओं के लिए न केवल चिन्तन और मनन अपितु शोध का विषय है।

संदभ ग्रन्थ सूची :–

1. मनुस्मृति अध्याय 7, श्लोक संख्या 99, पृ. 165
2. ठाकुर लक्ष्मीदत्त प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, 1965, पृ. 219–20
3. मोटवानी, केवल मनु धर्मषास्त्र, गणेष एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, मद्रास, 1958, पृ. 137–39
4. जायसवाल, के.पी. हिन्दू पॉलिटी, द बैंगलोर प्रिंटिंग एण्ड पब्लिषिंग हाउस क. लिमिटेड, बैंगलोर सिटी, 1967, पृ. 227–228